# नागार्जुन

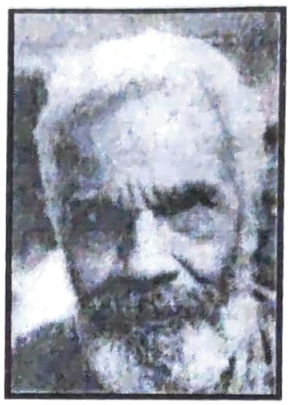

| | | |
|---|---|---|
| जन्म | : | 1911 । |
| निधन | : | 5 नवंबर 1998 । |
| जन्म-स्थान | : | ग्राम-तरौनी, जिला-दरभंगा, बिहार । |
| मूल नाम | : | वैद्यनाथ मिश्र । |
| साहित्यिक नाम | : | नागार्जुन, यात्री (मैथिली साहित्य में) । |
| शिक्षा | : | परंपरागत प्राचीन पद्धति से संस्कृत की शिक्षा । |
| अभिरुचि | : | घुमक्कड़ी, राजनीति और जन-मुक्ति के आंदोलनों और संघर्षों में सक्रिय रचनात्मक भागीदारी । |
| सम्मान | : | मैथिली काव्य संग्रह 'पत्रहीन नग्न गाछ' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार । उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान से पुरस्कृत । बिहार का शिखर सम्मान । |
| प्रमुख कृतियाँ | : | युगधारा, सतरंगे पंखोंवाली, प्यासी पथराई आँखें, तालाब की मछलियाँ, चंदना, खिचड़ी विप्लव देखा मैंने, तुमने कहा था, पुरानी जूतियों का कोरस, हजार-हजार बाहों वाली - सभी हिंदी कविता संग्रह । भस्मांकुर (खंडकाव्य) । चित्रा, पत्रहीन नग्न गाछ (मैथिली कविता संग्रह, जिनका अनुवाद हिंदी में भी हो चुका है); धर्मलोक शतकम् (संस्कृत काव्य); रतिनाथ की चाची, बाबा बटेसरनाथ, दुखमोचन, बलचनमा, वरुण के बेटे, नई पौध आदि उपन्यास । संस्कृत की कुछ कृतियों का अनुवाद ।प्रतिनिधि कविताएँ (सं० डॉ० नामवर सिंह) । नागार्जुन रचनावली (7 खंडों में), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली । |

आधुनिक हिंदी साहित्य में प्रगतिवाद या प्रगतिशील धारा के प्रमुख रचनाकार नागार्जुन का कविता एवं कथा साहित्य में समान रूप से महत्त्वपूर्ण योगदान है.। व्यक्तित्व, रचना एवं कार्यों में सादृश्य के कारण 'आधुनिक कबीर' का सम्मान पानेवाले नागार्जुन स्वाधीन भारत के प्रतिनिधि जनकवि के रूप में भी पहचाने जाते हैं । नागार्जुन की ख्याति हिंदीतर भारतीय भाषाओं के साथ ही अंतरराष्ट्रीय भी है । दृष्टिकोण, विचारधारा, संवेदना, कला और भाषा–इन सभी स्तरों पर नागार्जुन का साहित्य जन-प्रतिबद्ध है । यहाँ 'जन' से आशय बहुसंख्यक जन से है जो विभिन्न स्तरों पर मनुष्योचित अधिकार, सम्मान और गरिमा के लिए संघर्षरत हैं । आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक समानता तथा न्याय के लिए जो संघर्ष भारतीय समाज में निरंतर चल रहा है, नागार्जुन उसके साथ हैं; चिंतन, रचना, आचरण आदि के सभी धरातलों पर । उनका संपूर्ण साहित्य भारतीय जनता की अपराजेय जिजीविषा, संकल्प और संघर्ष का साक्ष्य है ।

नागार्जुन के काव्य में व्यर्थ की भावुकता, रोमानीपन, काल्पनिकता और शब्द क्रीड़ा के लिए स्थान

नहीं है । व्यर्थ के गर्जन-तर्जन, जोश और उत्साह के हवाई प्रदर्शन, ललकार और चीख-पुकार–इन सबसे बचते हुए वे प्रकृति, जीवन, समाज और मानव संबंधों के यथार्थ पर अपनी अचूक और बेधक दृष्टि जमाए रखते हैं । दूर की कौड़ी लाने के लोभ में पड़कर वे जीवन-जगत की खुरदुरी और विषम वास्तविकता से आँखें नहीं चुराते, मुँह नहीं मोड़ते; वे उसका चित्रण करते हैं तथा उसके माध्यम से आदमी के जीवन-सरोकारों और सचाइयों को सामने लाकर मनुष्य में हमारे विश्वास को बल प्रदान करते हैं ।

समाज का शोषित-दलित-वंचित वर्ग नागार्जुन की संवेदना और सहानुभूति का विशेष भाजन बना है, किंतु उनकी संवेदना उस वर्ग के प्रति भावुकतापूर्ण सहानुभूति नहीं जगाती, बल्कि उसकी विषम दशा के कारणों की पड़ताल के लिए उकसाती हुई उसके पक्ष में एक तरह की मोर्चेबंदी के लिए अभिप्रेरित करती है । इस तरह उनका साहित्य सक्रिय प्रतिरोध का साहित्य बन जाता है । नागार्जुन का काव्य व्यंग्य का जैसा सोद्देश्य रचनात्मक उपयोग करता है वह अलग से उल्लेखनीय है । उनका व्यंग्य कबीर की तरह ही पैना, सोद्देश्य और सामाजिक है । डॉ० रामविलास शर्मा की मान्यता है कि ''उनकी कविताएँ लोक संस्कृति के इतना नजदीक हैं कि उसी का एक विकसित रूप मालूम होती हैं, किंतु वे लोकगीतों से भिन्न हैं, सबसे पहले अपनी भाषा खड़ी बोली के कारण, उसके बाद अपनी प्रखर राजनीतिक चेतना के कारण, और अंत में बोलचाल की भाषा की गति और लय को आधार मानकर नए-नए प्रयोगों के कारण । हिंदी भाषी किसान और मजदूर जिस तरह की भाषा समझते और बोलते हैं, उसका निखरा हुआ काव्यमय रूप नागार्जुन के यहाँ है ।''

डॉ० नामवर सिंह के द्वारा संपादित 'प्रतिनिधि कविताएँ' नामक संकलन से ली गई कविता - 'बहुत दिनों के बाद' घुमक्कड़ कवि की देशज प्रकृति और घरेलू संवेदना का एक दुर्लभ साक्ष्य प्रस्तुत करती है । नागार्जुन के स्वभाव और संवेदना का आधार भाव यही है, उनकी जड़ें भी यहीं हैं । यहीं से वे जीवन-रस और प्राण-ऊर्जा पाते हैं । मिथिला का उनका अपना गाँव-घर, रक्तवाहिनी धमनियों और शिराओं की तरह, उनकी कविताओं में फैला हुआ है । वह प्रकृत संयम और ठेठपन बनकर उनके काव्य में हर पल उपस्थित है । कवि को दीन-दुखी-दलित जन का वफादार और हितू यही बनाए रखता है, यथार्थ से दृढ़तापूर्वक यही जोड़े रखता है । नागार्जुन की कविता के ऐंद्रिय आधार और स्थाई मनं-मिजाज का यह कविता एक दुर्लभ उदाहरण है ।

♦ ♦ ♦

**"कविता की उठान तो कोई नागार्जुन से सीखे और नाटकीयता में तो वे जैसे लाजवाब ही हैं । जैसी सिद्धि छंदों में, वैसा ही अधिकार बेछंद या मुक्तछंद की कविता पर । उनके बात करने के हजार ढंग हैं । और भाषा में भी बोली के ठेठ शब्दों से लेकर संस्कृत की संस्कारी पदावली तक इतने स्तर हैं कि कोई भी अभिभूत हो सकता है ।"**

**( नागार्जुन : प्रतिनिधि कविताएँ )**

**–डॉ० नामवर सिंह**

# बहुत दिनों के बाद

बहुत दिनों के बाद
अब की मैंने जी-भर देखी
पकी-सुनहली फसलों की मुसकान
-बहुत दिनों के बाद
बहुत दिनों के बाद
अब की मैं जी-भर सुन पाया
धान कूटती किशोरियों की कोकिल-कंठी तान
-बहुत दिनों के बाद
बहुत दिनों के बाद
अब की मैंने जी-भर सूँघे
मौलसिरी के ढेर-ढेर से ताजे-टटके फूल
-बहुत दिनों के बाद
बहुत दिनों के बाद
अब की मैं जी-भर छू पाया
अपनी गँवई पगडंडी की चंदनवर्णी धूल
-बहुत दिनों के बाद
बहुत दिनों के बाद
अब की मैंने जी-भर तालमखाना खाया
गन्ने चूसे जी-भर
-बहुत दिनों के बाद
बहुत दिनों के बाद
अब की मैंने जी-भर भोगे
गंध-रूप-रस-शब्द-स्पर्श सब साथ-साथ इस भू पर
-बहुत दिनों के बाद

# अभ्यास

**कविता के साथ**

1. बहुत दिनों के बाद कवि ने क्या देखा और क्या सुना ?
2. कवि ने अपने गाँव की धूल को क्या कहा है ? और क्यों ?
3. कविता में 'बहुत दिनों के बाद' पंक्ति बार-बार आई है । इसका क्या औचित्य है ? इसका महत्त्व बताएँ ।
4. पूरी कविता में कवि अत्यंत उल्लसित है । इसका क्या कारण है ?
5. ''अब की मैंने जी-भर भोगे
   गंध-रूप-रस-शब्द-स्पर्श सब साथ-साथ इस भू पर''
   इन पंक्तियों का मर्म उद्‌घाटित करें ।
6. इस कविता में ग्रामीण परिवेश का कैसा चित्र उभरता है ?
7. 'धान कूटती किशोरियों की कोकिल-कंठी तान' में जो सौंदर्य चेतना दिखलाई पड़ती है, उसे स्पष्ट करें ।
8. कविता में जिन क्रियाओं का उल्लेख है वे सभी सकर्मक क्रियाएँ हैं । सकर्मक क्रियाओं का सुनियोजित प्रयोग कवि ने क्यों किया है ?
9. कविता के हर बंद में एक-एक ऐंद्रिय अनुभव का जिक्र है और अंतिम बंद में उन सबका सार-समवेत कथन है । कैसे ? इसे रेखांकित करें ।

**कविता के आस-पास**

1. तालमखाना खाने और गन्ना चूसने में कवि को मिले आनंद की कल्पना कीजिए और उसे अपने शब्दों में लिखिए ।
2. कविता में धान कूटने का उल्लेख है, धान की बुआई-कटाई-सिंचाई के बारे में जानकारी प्राप्त करें । इसकी प्रमुख किस्मों के नाम भी मालूम करें ।
3. किसान जीवन से लोकगीतों का अटूट संबंध है । फसलों की कटाई के समय गाए जाने वाले किन्हीं दो गीतों का संग्रह करें और उन्हें कक्षा में सुनाएँ ।
4. नागार्जुन की कविताओं में प्रकृति को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है । उनकी चर्चित कविता 'बादल को घिरते देखा है' उपलब्ध करें और विद्यालय की काव्य गोष्ठी में उसका सस्वर पाठ करें ।
5. नागार्जुन एक घुमक्कड़ कवि के रूप में जाने जाते थे । आप अपने शिक्षक से इस विषय में जानकारी प्राप्त करें और उस पर चर्चा करें ।
6. नागार्जुन को 'आधुनिक कबीर' क्यों कहा जाता है ?
7. नागार्जुन को किन कारणों से राहुल सांकृत्यायन के साथ जोड़कर देखा जाता है ? अपने शिक्षक से इस

विषय पर चर्चा करें ।

**भाषा की बात**

1. कोकिलकंठी, चंदनवर्णी में कौन-सा अलंकार है ?
2. 'मैंने' सर्वनाम के किस भेद के अंतर्गत है ?
3. निम्नलिखित शब्दों को तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशज समूहों में विभक्त करें -
   पगडंडी, तालमखाना, गंध, मौलसिरी, टटका, फूल, मुसकान, फसल, स्पर्श, गँवई, गन्ना
4. सकर्मक और अकर्मक क्रिया में क्या अंतर है ? सोदाहरण स्पष्ट करें ।
5. निम्नलिखित शब्दों के लिए प्रयुक्त विशेष्य बताइए -

| | |
|---|---|
| कोकिल-कंठी | ..... |
| पकी सुनहली | ..... |
| गँवई | ..... |
| चंदनवर्णी | ..... |
| ताजे-टटके | ..... |
| धान कूटती | ..... |

**शब्द निधि**

| | | |
|---|---|---|
| जी-भर | : | मन भर, इच्छा भर |
| किशोरी | : | नई उम्र की लड़की |
| कोकिल कंठी | : | कोयल जैसे मीठे स्वर वाली |
| गँवई | : | गाँव की |
| चंदनवर्णी | : | चंदन के रंग की |
| मौलसिरी (मौलिश्री) | : | एक बड़ा सदाबहार पेड़ जिसमें छोटे-छोटे सुगंधित फूल लगते हैं, बकुल |
| तालमखाना | : | एक मेवा जो मिथिला की ताल-तलैयों में विशेष रूप से उपजाया जाता है । |
| गन्ना | : | ईख |
| पगडंडी | : | कच्चा-पतला-इकहरा रास्ता |
| भू | : | पृथ्वी |